CHETANA
International Journal of Education

Impact Factor
SJIF 2021 - 6.169

Peer Reviewed/
Refereed Journal

ISSN-Print-2231-3613
Online-2455-8729

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

Received on 28th Jan. 2022, Revised on 28th Feb. 2022, Accepted 30th Mar. 2022

शोध–आलेख

उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के मध्य विद्यालय वातावरण के सम्बन्ध में शैक्षिक चेतना, समायोजन एवं मूल्य अभिविन्यास का अध्ययन

* पूनम देवी बिश्नोई, *शोधार्थी*
डॉ. रीतू बाला, *शोध निर्देशिका एवं प्रोफेसर*
टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर
E-mail- drritubala77@gmail.com, **Mob.-***9461569991*

मुख्य शब्द– *उच्च माध्यमिक विद्यालय, विद्यालय वातावरण, समायोजन आदि।*

शोध सार

प्रस्तुत शोधकार्य में ''उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के मध्य विद्यालय वातावरण के सम्बन्ध में शैक्षिक चेतना, समायोजन एवं मूल्य अभिविन्यास का अध्ययन किया गया हैं। अध्ययन में प्राप्त आंकडों के आधार पर निष्कर्ष प्राप्त किये गए है। यह अध्ययन राजस्थान के श्रीगंगानगर जिले के उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाले कुल 800 विद्यार्थियों को सम्मिलित पर किया गया है। इस हेतु विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण मापन के लिए शोधकर्त्री द्वारा डॉ. एम. एल. शाह एवं डॉ. अमित शाह द्वारा निर्मित Academic Climate Description Questionnaire (ACDQ) मापनी, शैक्षिक चेतना मापन के लिए स्वनिर्मित शैक्षिक चेतना मापनी, समायोजन स्तर को जानने हेतु प्रो. ए. के. पी. सिन्हा (पटना) व आर. पी. सिंह (पटना) द्वारा निर्मित मानकीकृत समायोजन मापनी सूची तथा विद्यार्थियों के मूल्यों के मापन के लिए शोधकर्त्री द्वारा डॉ. जी.पी. सैरी एवं डॉ. आर.पी. वर्मा द्वारा निर्मित मूल्य मापनी का उपयोग किया गया है। निष्कर्ष रूप में पाया गया कि उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के शैक्षिक चेतना तथा विद्यालय वातावरण, समायोजन तथा विद्यालय वातावरण, मूल्य अभिविन्यास तथा विद्यालय वातावरण में सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया।

प्रस्तावना

शिक्षा ही मूल्यों को अपने अनुसार बनाती है अथवा उनमें आवश्यक परिवर्तन भी करती है। शैक्षिक चेतना का सामाजिक जीवन में बहुत अधिक महत्व है। क्योंकि शिक्षा के बिना मनुष्य को पूंछ विहिन पशु कहा जाता है। सच्ची शिक्षा का उद्देश्य मूल्यों की शिक्षा देना है। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य पहने जाने वाले परिधान के साथ–साथ अपने उठने–बैठने, चलने–फिरने और सामाजिक रीति रिवाजों को सीखता है। बच्चें कैसा आचरण करे, इसका निर्णय अनौपचारिक रूप से माता–पिता, समाज के बड़े–बूढ़े या विद्यालय करते हैं। बाल्यकाल अवस्था तक बालक की तार्किक शक्ति जाग्रत नहीं हो पाती। इस समय वह अनुकरण करना सीखता है। अतः

वह कैसा आचरण करे, इसे उसके माता–पिता, अध्यापक व अन्य लोग सीधे बतलाते हैं। जब कोई आचरण बार–बार किया जाए तो वह आदत बन जाता है। अतः आदतों के निर्माण में परिवार तथा विद्यालय वातावरण की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है।

मानव को श्रेष्ठ एवं उन्नतिशील प्राणी के निर्माण में शिक्षा, शिक्षक एवं विद्यालयों की महती भूमिका होती है। छात्रों में शैक्षिक चेतना एवं मूल्यो को उत्पन्न करने में विद्यालय वातावरण काफी हद तक उत्तरदायी होता है। यदि विद्यालय वातावरण अनुकूल है तो छात्रों में अपेक्षित गुणों का विकास होगा और वे जीवन में उत्तरोत्तर सफलता की सीड़ियों में चढ़ते जायेंगे तथा जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता का परचम लहरायेंगे परन्तु यदि विद्यालय वातावरण प्रतिकूल है तो छात्रों में इन सर्वगुणों का विकास कुंठित हो जायेगा और वे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में असफल सिद्ध होंगे। विद्यार्थियों में व्यक्तित्व निर्माण तथा उनकी प्रतिष्ठा अधिकांशतः उनके सहपाठियों अथवा उनके समूह व वर्ग की अनुक्रिया एवं मूल्यांकन पर निर्भर करती है। भारत में विभिन्न शैक्षिक वातावरण वाले विद्यालय विद्यमान हैं। प्रशासन की दृष्टि से इन्हें हम राजकीय अथवा निजी, आवासीय, सहशिक्षा, बालिका शैक्षिक संस्थायें, स्ववित्तपोषित एवं वित्तविहीन संस्थाओं में वर्गीकृत कर सकते हैं। प्रत्येक प्रकार के विद्यालयों का अपना अद्वितीय शैक्षिक वातावरण होता है। विभिन्न प्रकार का विद्यालय वातावरण होने के बावजूद इन शैक्षणिक संस्थाओं का एकमात्र उद्देश्य बालकों का सर्वांगीण विकास करना है।

विद्यार्थी विद्यालयों में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में संलग्न रहकर शैक्षिक उद्देश्यों की संप्राप्ति करते हैं। परन्तु विचारणीय तथ्य यह है कि किस प्रकार के विद्यालय वातावरण विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण, समायोजन व मूल्यों के साथ–साथ अपेक्षित शैक्षिक संप्राप्ति में सर्वाधिक भूमिका निभाता है। आज विश्व भर में सभी मानव मूल्यों का तेजी से पतन हो रहा है। आज न केवल भारत में बल्कि सम्पूर्ण विश्व में मूल्यों के महत्त्व को समझने, उनको व्यवहार व कार्य में अमल में लानी की आवश्यकता है। इस प्रकार विद्यालय वातावरण के अंतर्गत वे समस्त बातें आ जाती है जिनका संबंध विद्यालय की आंतरिक अथवा बाह्य व्यवस्था से होता है। शिक्षक–समुदाय, समय–तालिका, परीक्षा, पाठ्यक्रम आदि सभी विद्यालय प्रबंध के अंतर्गत ही आ जाते हैं।

मूल्य आदर्श जीवन जीने की कला है जिसके अन्तर्गत हित, आनन्द, कर्त्तव्य, नैतिक दायित्व, आवश्यकताएं, समायोजन,पसन्द, नापसन्द, बदलाव आदि सम्मिलित हैं। मूल्य आमतौर पर कर्म की दृष्टि से चयन के मानदण्ड होते हैं, ये मानदण्ड व्यवहार के नियम होते हैं जो हमें यह बताते हैं कि कुछ विशेष परिस्थितियों में हमें क्या करना चाहिए अथवा नहीं। इस प्रकार मूल्य का सम्बन्ध उन गुणों से भी है, जिन पर किसी संस्था अथवा समाज की महत्ता, उपयोगिता, वांछनीयता का दारोमदार होता है। क्या अच्छा या हितकर और सुन्दर है– यह भावनात्मक आस्था मूल्यों के साथ रहती है। चूंकि मूल्य में भावात्मकता का तत्त्व होता है अतः व्यक्ति के दृष्टिकोण या विश्वास बहुत जटिल होते हैं, उन्हें बदलना बहुत कठिन होता है।

प्रस्तुत शोध का महत्व

राष्ट्र के लिए सुयोग्य नागरिकों के निर्माण की प्रक्रिया में शिक्षा के औपचारिक साधनों के रूप में विद्यालय/महाविद्यालयों की भूमिका अतुलनीय है। विद्यार्थियों के शारीरिक, मानसिक, सांवेगिक, नैतिक, आर्थिक एवं आत्मिक विकास के निर्माण के आधार भारतीय विद्यालय, विद्यालयों में कार्यरत शिक्षण, शिक्षणेत्तर कर्मचारी, विद्यालय में उपलब्ध संसाधन एवं विद्यालयों का वातावरण हैं।

विद्यालय वातावरण विद्यार्थियों में विभिन्न स्तर की शैक्षिक चेतनाओं एवं अभिप्रेरणाओं को जन्म देता है जिसके फलस्वरुप बालक शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में रुचिपूर्वक उत्साह से भाग लेकर अपना सर्वांगीण विकास करता है। शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश्य छात्रों में शैक्षिक चेतना, मूल्यों, आत्मविश्वास, सृजनात्मकता, तथा समायोजन का विकास करना है और इन सबके विकास में विद्यालय वातावरण की भूमिका महत्वपूर्ण होती है।

विद्यालय का संस्थागत वातावरण उस विद्यालय की शैक्षिक गुणवत्ता एवं सफलता का प्रतिबिम्ब होता है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि किसी विद्यालय के वातावरण के बारे में जानकारी प्राप्त करके उस विद्यालय की शैक्षिक गुणवत्ता एवं सफलता का अनुमान सहजतापूर्वक लगाया जा सकता है। बच्चे ही राष्ट्र की धरोहर होते हैं तथा किसी देश का भविष्य वहाँ की शिक्षा प्रणाली एवं राष्ट्र के नागरिक होते हैं। बालकों के विकास पर ही देश की प्रगति एवं उन्नयन निर्भर करता है।

विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति पर उनके विद्यालय के वातावरण, का प्रभाव पड़ता है और विद्यार्थी अपनी सम्प्राप्ति के आधार पर ही अपने जीवन के लक्ष्य, आकांक्षाओं का निर्धारण करते हैं, साथ ही उनकी शैक्षिक चेतना उनको भविष्य में उच्चतम स्तर की उपलब्धि प्राप्त करने हेतु प्रेरणा प्रदान करती है। प्रेरणायें मनुष्य के जीवन में प्रकाश स्रोत की तरह कार्य करती हैं, जो विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं कैरियर निर्माण में उनके विद्यालय वातावरण, मूल्य, समायोजन एवं शैक्षिक चेतना के चरों के महत्व, विषय की उपयोगिता को दृष्टिगत रखते हुए शोधकर्त्री द्वारा इस विषय पर कार्य करने का निर्णय किया गया है। शोधकर्त्री ने अपनी शोध समस्या का निम्न प्रकार अभिकथन किया है।

समस्या कथन

''प्रतियोगी परीक्षाओं की कोचिंग लेने वाले विद्यार्थियों में केरियर के प्रति बढ़ते दबाव एवं समायोजन का अध्ययन''

शोध शीर्षक में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण

उच्च माध्यमिक विद्यालय

उच्च माध्यमिक विद्यालयों से तात्पर्य उन विद्यालयों से है जो माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा संचालित है तथा जिन विद्यालयों में कक्षा 10 के बाद अर्थात कक्षा 11 व 12 में अध्ययन कार्य करवाया जाता है।

विद्यालय वातावरण

संस्थागत वातावरण (Academic Climate) किसी विद्यालय के संस्थागत वातावरण से अभिप्राय एक ऐसे वातावरण से होता है, जहाँ शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया स्वतः एवं स्वाभाविक होता है, जहाँ शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में आये अवरोधों को शिक्षक एवं शिक्षार्थी दोनों के संयुक्त प्रयास से दूर किया जाता है, जहाँ छात्र सीखने की क्रिया में स्वयं उत्साह से भाग लेता है और अपने व्यवहार में वांछित परिवर्तन लाने का प्रयास करता ह

शैक्षिक चेतना

शाब्दिक अर्थ में शैक्षिक चेतना से तात्पर्य शिक्षा सम्बन्धी ज्ञान मूलक, बुद्धि एवं समझ मूलक मनोवृत्ति से है, जिसके आधार पर शिक्षा सम्बन्धी सम्प्रत्य के सही निर्णय लिये जा सकें अर्थात् विद्यार्थियों की शैक्षिक चेतना से अभिप्रायः विद्यार्थियों की शिक्षा सम्बन्धी वे सभी समस्याएं जो कि उनके शिक्षा क्षेत्र से सम्बन्धित हैं, के विषय में जानने सम्बन्धी चेतना से है जिसे ''शैक्षिक चेतना'' नाम दिया है।

समायोजन

समायोजन वह पथ है, जिस पर चलते हुए हम ऐसे वातावरण में जो कभी सहायक है तो कभी जटिल है और कभी हानिकारक है, अपनी आश्यकताओं की तुष्टि करते हैं। संक्षेप में समायोजन का अर्थ विद्यार्थियों में परिवार, आस पड़ौस, विद्यालय तथा समाज में उनके व्यवहार सम्बन्धी समायोजन से है चाहे वे ग्रामीण क्षेत्र से हो या शहरी, चाहे वे छात्र हों या छात्राऐं, उनके समायोजन सम्बन्धी पक्ष का अध्ययन करना है।

मूल्य अभिविन्यास

'मूल्य अभिविन्यास एक प्रकार का मानक है। मनुष्य किसी वस्तु, क्रिया, विचार को अपनाने से पूर्व यह निर्णय करता है कि वह उसे अपनाये या त्याग दे। जब ऐसा विचार व्यक्ति के मन में निर्णयात्मक ढंग से आता है तो वह मूल्य कहलाता है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक चेतना तथा विद्यालय वातावरण मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।
2. उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन तथा विद्यालय वातावरण मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।

3. उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के मूल्य अभिविन्यास तथा विद्यालय वातावरण मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकपनाएँ

1. उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक चेतना तथा विद्यालय वातावरण में सार्थक सहसम्बन्ध है।
2. उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन तथा विद्यालय वातावरण में सार्थक सहसम्बन्ध है।
3. उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के मूल्य अभिविन्यास तथा विद्यालय वातावरण में सार्थक सहसम्बन्ध है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध में न्यादर्श के रूप में राजस्थान के श्रीगंगानगर उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाले कुल 800 को सम्मिलित पर किया गया है।

शोध में प्रयुक्त उपकरण

1. **Academic Climate Description Questionnaire (ACDQ) (डॉ. एम. एल. शाह एवं डॉ. अमित शाह) –**

   विभिन्न उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण मापन के लिए शोधकर्त्री द्वारा डॉ. एम. एल. शाह एवं डॉ. अमित शाह द्वारा निर्मित Academic Climate Description Questionnaire (ACDQ) मापनी का प्रयोग किया गया।

2. **शैक्षिक चेतना मापनी (स्वनिर्मित)**

   शोधकर्त्री द्वारा अपने शोधकार्य हेतु स्वनिर्मित शैक्षिक चेतना मापनी का प्रयोग किया गया।

3. **समायोजन मापनी (ए. के. पी. सिन्हा व आर. पी. सिंह)**

   विभिन्न उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन के मापन के लिए शोधकर्त्री द्वारा प्रो. ए. के. पी. सिन्हा (पटना) व आर. पी. सिंह (पटना) द्वारा निर्मित समायोजन मापनी सूची का प्रयोग किया गया।

4. **मूल्य मापनी (डॉ. जी.पी. सैरी एवं डॉ. आर.पी. वर्मा)**

   विभिन्न उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के मूल्यों के मापन के लिए शोधकर्त्री द्वारा डॉ. जी.पी. सैरी एवं डॉ. आर. पी. वर्मा द्वारा निर्मित मूल्य मापनी का प्रयोग किया गया।

प्रदत्तों का विश्लेषण व विवेचन

सारणी संख्या – 1

उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक चेतना तथा विद्यालय वातावरण में सार्थक सहसम्बन्ध है।

विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	सहसम्बन्ध	सार्थकता का स्तर
शैक्षिक चेतना	800	49.14	6.547		
विद्यालय वातावरण	800	116.51	13.637	–0.018	स्वीकृत

N1+N2-2=800+800-2=1598

उपर्युक्त सारणी संख्या 1 अनुसार उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक चेतना तथा विद्यालय वातावरण सहसम्बन्धी दत्तों का विश्लेषण किया गया जिसमे गणना के आधार पर सहसम्बन्ध गुणांक r का मान –0.018 प्राप्त हुआ जो कि सार्थकता के दोनों स्तरों 0.5 व .01 पर सार्थक है अतः शोधकर्त्ता द्वारा निर्मित परिकल्पना उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक चेतना तथा विद्यालय वातावरण में सार्थक सहसम्बन्ध पाया जाता, स्वीकृत की जाती है । अतः निष्कर्ष रुप में कहा जा सकता है कि उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक चेतना तथा विद्यालय वातावरण में सामान्य कोटि का ऋणात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।

सारणी संख्या – 2

उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन तथा विद्यालय वातावरण में सार्थक सहसम्बन्ध है।

विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	प्रमापविचलन	टी मान	सार्थकता का स्तर
समायोजन	800	47.22	11.572	–0.017	स्वीकृत
विद्यालय वातावरण	800	116.53	13.637		

N1+N2-2=800+800-2 =1598

उपर्युक्त सारणी संख्या 2 अनुसार उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन तथा विद्यालय वातावरण सहसम्बन्धी दत्तों का विश्लेषण किया गया जिसमे गणना के आधार पर सहसम्बन्ध गुणांक त का मान –0.017 प्राप्त हुआ जो कि सार्थकता के दोनों स्तरों 0.5 व .01 पर सार्थक है अतः शोधकर्त्ता द्वारा निर्मित परिकल्पना उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन तथा विद्यालय वातावरण में सार्थक सहसम्बन्ध पाया जाता, स्वीकृत की जाती है । अतः निष्कर्ष रुप में कहा जा सकता है कि उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन तथा विद्यालय वातावरण में सामान्य कोटि का ऋणात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।

सारणी संख्या – 3

उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के मूल्य अभिविन्यास तथा विद्यालय वातावरण में सार्थक सहसम्बन्ध है।

विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी मान	सार्थकता का स्तर
मूल्य अभिविन्यास	800	96.62	7.924	–0.002	स्वीकृत
विद्यालय वातावरण	800	116.51	**13.637**		

N1+N2-2=800+800-2 =1598

उपर्युक्त सारणी संख्या 3 के अनुसार उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के मूल्य अभिविन्यास तथा विद्यालय वातावरण सहसम्बन्धी दत्तों का विश्लेषण किया गया जिसमे गणना के आधार पर सहसम्बन्ध गुणांक r का मान –0.002 प्राप्त हुआ जो कि सार्थकता के दोनों स्तरों 0.5 व .01 पर सार्थक है अतः शोधकर्त्ता द्वारा निर्मित परिकल्पना उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के मूल्य अभिविन्यास तथा विद्यालय वातावरण में सार्थक सहसम्बन्ध पाया जाता, स्वीकृत की जाती है । अतः निष्कर्ष रुप में कहा जा सकता है कि उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के मूल्य अभिविन्यास तथा विद्यालय वातावरण में सामान्य कोटि का ऋणात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।

सुझाव

परिवार एवं विद्यालय मिलकर ऐसे वातावरण का निर्माण करें जहाँ बालकों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित हो उनमें जाति, सम्प्रदाय, लिंग, भाषा आदि से मुक्त हो कर राष्ट्रीय एकता, समानता, मानवीय प्रतिष्ठा एवं विश्व बन्धुत्व जैसे मूल्यों का विकास हो सकें।

विद्यार्थियों में शैक्षिक चेतना का विकास हो जो आज समाज एवं स्वयं विद्यार्थियों के लिए एक आवश्यक तत्व है। शैक्षिक चेतना आज अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता में शामिल होने के लिए उपयोगी सिद्ध होगी। विद्यार्थियों, उनके माता–पिता एवं अध्यापकों को भी इस बारे में जागरूक रहना चाहिए कि विद्यार्थियों में समायोजन एवं सामाजिक मूल्यों का विकास होता है।

सन्दर्भ सूची

1. **अग्रवाल एवं स्वर्णकार** (2006) विद्यालयों के भैतिक वातावरण का छात्रों के आत्मविश्वास पर प्रभाव का अध्ययन, एपियर जर्नल ऑफ एजूकेशन, अंक 6 पेज 22–26।
2. **कपिल, एच. के. (2006)**, सांख्यिकी के मूल तत्व, आगरा : विनोद पुस्तक मंदिर।
3. **गुड, सी.वी.** डिक्शनरी ऑफ एज्यूकेशन, नई दिल्ली : मेकग्रा हिल बुक कम्पनी।
4. **गुप्ता नथूलाल** "मूल्यपरक शिक्षा एवं समाज" नमन प्रकाशन नई दिल्ली
5. **नागर, कैलाश** *''सॉख्यिकी के मूल तत्व''* मिनाक्षी प्रकाशन, मेरठ, पृष्ठ सं. 310
6. **भोजक बी. एल. (1989)** ''किशोर बालक–बालिकाओं की समायोजन सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन '' पृष्ठ सं.196,197,198
7. **मथुरिया मुकुट बिहारी (2008)** ''आवासीय व गैर आवासीय विद्यालयों के विद्यार्थियों में समायोजन एवं सामाजिक एकीकरण का अध्ययन"
8. **मंगल, एस.के. ;2008द्ध**, शिक्षा मनोविज्ञान, नई दिल्ली : प्रिन्टस हॉल ऑफ इण्डिया प्राइवेट लिमिटेड।
9. **प्रो. श्री वास्तव सी. बी., डॉ. शर्मा माता प्रसाद** *''शैक्षिक अनुसंधान की विधियॉ" अपोलो प्रकाशन, जयपुर पृष्ठ सं. 38*
10. **रायजादा, बी.एस. (1997)**, शिक्षा में अनुसंधान के तत्व, जयपुर : राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
11. **सिंह, रामपाल और शर्मा, ओ.पी. (2008)**, शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकीय, आगरा अग्रवाल पब्लिकेशन।
12. **सैनी बाबू लाल** ''शिक्षा मनोविज्ञान" पृष्ठ सं.196,197,198
13. **श्रीमती शर्मा आर. के. व दुबे कृष्ण, श्रीमती बरौलिया डॉ. ए.** *''शिक्षा के मनावैज्ञानिकीय आधार''* राधा प्रकाशन मन्दिर आगरा, पृष्ठ सं. 239,240
14. **चौधरी प्यारेलाल** "मूल्य शिक्षा" नया शिक्षक अप्रेल.जून 2010
15. www.ncpr.gov.in/reports,UNESCO-word-Declaration-on-Education
16. www.fordham.bepress.com/dessertation/AA/3554171
17. www.gatesfoundavition.org/nr

*** Corresponding Author**

पूनम देवी बिश्नोई, *शोधार्थी*

डॉ. रीतू बाला, *शोध निर्देशिका एवं प्रोफेसर*

टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर

E-mail- drritubala77@gmail.com, Mob.-*9461569991*